गाँधी-चिन्तन

शाश्वत मार्गदर्शन का आधार

सम्पादक
डॉ. मानप्रकाश मीणा
डॉ. जितेन्द्र कुमार लोढ़ा

गाँधी-चिन्तन

शाश्वत मार्गदर्शन का आधार

सम्पादक

डॉ. मानप्रकाश मीणा

डॉ. जितेन्द्र कुमार लोढ़ा

©

सुरक्षित

संस्करण : 2021

ISBN : *978-93-90449-27-9*

मूल्य : ₹ **500.00/-**

Available on : Amazon.in, Flipkart.com

प्रकाशक

साहित्यागार

धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर

☎ : 0141-2310785, 4022382, 2322382, Mob.: 9314202010
e-mail: sahityagar@gmail.com
website : sahityagar.com
webmail : mail@sahityagar.com

लेजर टाइपसैटिंग : भूमि ग्राफिक्स, जयपुर
मुद्रक : शीतल ऑफसैट, जयपुर

अनुक्रम

मुख्यमन्त्री संदेश 7

आमुख 9

भूमिका 15

1. **महात्मा गाँधी की नयी तालीम** 23
   डॉ. बजरंग लाल सैनी
2. **महात्मा गाँधी का भाषाई विमर्श एवं शिक्षा** 34
   डॉ. महेश नारायण दीक्षित
3. **गाँधीजी एवं सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा** 45
   डॉ. मदन लाल मीना एवं संतोष कुमार
4. **गाँधी दर्शन की चरित्र निर्माण में भूमिका** 53
   डॉ. सुशीला देवी मीणा
5. **गाँधी और धार्मिक परिप्रेक्ष्य** 68
   डॉ. भावना पारीक
6. **नया आर्थिक परिदृश्य और गाँधी** 79
   डॉ. सीमा पारीक
7. **गाँधी और नारी : रूढ़िवादी या क्रान्तिकारी** 87
   डॉ. अल्पना पारीक
8. **महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता** 94
   मनीषा टांक

Promoted to class VIII

9. हिन्दी उपन्यास और गाँधी-दर्शन 102
डॉ. सीताराम मीना

10. सत्यशोधक के आरोग्य सम्बन्धी प्रयोग 115
डॉ. मानप्रकाश मीणा

11. महात्मा गाँधी : विचार एवं आचार के ज्योति-पुंज 131
डॉ. मधुबाला

12. गाँधी-दर्शन एवं कोरोनाकाल : एक नई दृष्टि 139
डॉ. रेणुबाला

13. महात्मा गाँधी और हिन्दी भाषा 146
मनोज कुमार सैनी एवं इन्द्रजीत यादव

14. भारतीय संस्कृति और महात्मा गाँधी 163
डॉ. मनीषा शर्मा

15. महात्मा गाँधी और भाषायी-विमर्श 172
विक्रम बारहठ

16. महात्मा गाँधी का सपना ग्राम स्वराज : पंचायतीराज 179
डॉ. प्रहलाद सहाय बुनकर

17. पर्यावरणीय चिन्तन में गाँधीयन सन्दर्भ 188
डॉ. रजनी मीना

18. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गाँधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता 195
सत्यनारायण मीना

19. गाँधीवाद से प्रभावित समकालीन कवि (पन्त एवं दिनकर के विशेष सन्दर्भ में) 206
डॉ. अशोक कुमार मीणा

20. चंपारण सत्याग्रह और महात्मा गाँधी 214
अमरनाथ वर्मा

21. गाँधीजी का आर्थिक दर्शन 223
अभिषेक शर्मा एवं कमल कुमार मोदी

22. **समसामयिक परिपेक्ष्य में गाँधीजी के विचारों की प्रासंगिकता 229**
प्रेमपाल यादव

23. **महात्मा गाँधी : सिनेमा और विचार 238**
डॉ. प्रणु शुक्ला

24. **हिन्दी के आधुनिक साहित्यकारों की रचनाओं में गाँधीवादी चिन्तन 247**
डॉ. चन्द्र प्रकाश शर्मा

25. **महात्मा गाँधी की शैक्षिक अपेक्षाएँ व दृष्टिकोण—एक विवेचन 255**
डॉ. राजेश्वर प्रसाद

26. **गाँधीवाद एवं विश्व व्यवस्था 270**
डॉ. बलबीरसिंह

27. **गाँधी का काम ही गाँधी का धाम है..... 277**
डॉ. जितेन्द्र कुमार लोढ़ा

28. **राजनीतिक-क्षेत्र में गाँधी के विचारों का प्रवाह..... 286**
अशोक कुमार मीणा

गाँधीजी का आर्थिक दर्शन

अभिषेक शर्मा एवं कमल कुमार मोदी

सार संक्षेप

आधुनिक अर्थशास्त्र सम्पदा व लाभ अधिकतमीकरण पर केन्द्रित है वहीं गाँधीजी का आर्थिक विचार भारतीय सभ्यता के देशी प्रतिमान को व्यक्त करते हैं। गाँधीजी के सर्वोदय का अर्थशास्त्र व्यक्ति के कल्याण पर आधारित है, त्यागपूर्ण उपभोग करना व लोभ न करना। इसके मुख्य तत्त्व हैं। उपनिषदों का प्रभाव भी गाँधीजी के आर्थिक सिद्धान्तों पर रहा। गाँधीजी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मुख्य आधार मानकर आर्थिक विकास के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं। इस दर्शन का आधार विकेन्द्रीकरण है एवं सभी वर्गों को आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध करवाने हेतु न्यासिता का सिद्धान्त देकर भारतवासियों से स्वराज्य प्राप्ति की बात कही है। आज के समय में गाँधीजी का आर्थिक दर्शन ही वस्तुतः वर्तमान आर्थिक समस्याओं का निवारण है।

बीजशब्द—सर्वोदय, तर्कवाद, विकेन्द्रीकरण, ट्रस्टीशिप।

श्री अभिषेक शर्मा सहायक आचार्य (एबीएसटी) एवं श्री कमल कुमार मोदी, सहायक आचार्य (ईएएफएम) जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ (नागौर) में कार्यरत हैं। आप दोनों श्रेष्ठ अकादमिक व्यक्तित्व के साथ-साथ अनुसंधान-क्षेत्र के सक्रिय अध्येता भी हैं...

गाँधीवाद एवं विश्व व्यवस्था

डॉ. बलबीरसिंह

सार संक्षेप

विश्व शान्ति की कामना मानव जाति के विकास से ही सभी के लिए एक प्रमुख बहस का मुद्दा बना रहा है जिसे पिछले एक शताब्दी में बहुत प्रमुख बल मिला है; शीतयुद्धोत्तर युग में आये बदलावों व विश्वव्यवस्था में ढाँचागत परिवर्तनों ने इस बहस को और महत्वपूर्ण मोड़ पर ला खड़ा किया है। 20वीं शताब्दी में इसके आकलन करने हेतु विभिन्न दृष्टिकोणों जैसे—शक्ति की राजनीति (शक्ति संतुलन), भय का सिद्धान्त (नरसंहार के शास्त्रों), निशस्त्रीकरण (एन.पी.टी. एवं सी.टी. बी.टी.), ढाँचागत कार्यात्मकता आदि का उपयोग किया गया। परन्तु सभी दृष्टिकोण विश्वशान्ति स्थापित करने में विफल रहे हैं।

इसी संदर्भ में 1960 के दशक में 'भावी विश्व व्यवस्था' हेतु मुहिम के अन्तर्गत भी विभिन्न विद्वानों ने कई पुस्तकों एवं लेखों के माध्यम से भावी व्यवस्था का प्रारूप देने के प्रयास किए। उनके प्रयासों में पाँच प्रमुख तत्वों, जैसे—युद्ध रोकना, शान्ति स्थापना, गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण संतुलन एवं मानवीय निष्क्रियता या अलगाव को दूर करने को महत्व प्रदान किया गया था, परन्तु इस दिशा में भी न तो एक सर्वसम्मत दृष्टिकोण का निर्माण हो सका तथा न ही किसी प्रस्तावित सम्भावित

डॉ. बलबीर सिंह, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (नागौर) में सहायक-आचार्य, राजनीति विज्ञान के पद पर कार्यरत हैं। डॉ बलबीर अच्छे अकादमिक-व्यक्तित्व होने के साथ-साथ लेखन व संगोष्ठी-सहभागिता के क्षेत्र में भी अपनी दक्षता रखते हैं...

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ,
प्राकृत भारती अकादमी
प्रायोजित

प्राकृत बृहद् शब्दकोश

(अर्धमागधी, शौरसैनी, महाराष्ट्री, पैशाची व पाली)
(अपभ्रंश, संस्कृत व हिन्दी के शब्दों सहित)

(खण्ड-1)

संपादक
डॉ. राजेन्द्र रत्नेश
प्रो. दामोदर शास्त्री
प्रो. सुषमा सिंघवी

प्राकृत भारती पुष्प 426

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ,
प्राकृत भारती अकादमी
प्रायोजित

प्राकृत बृहद् शब्दकोश

(अर्धमागधी, शौरसैनी, महाराष्ट्री, पैशाची व पाली)
(अपभ्रंश, संस्कृत व हिन्दी के शब्दों सहित)

(खण्ड-1)

संपादक
डॉ. राजेन्द्र रत्नेश
प्रो. दामोदर शास्त्री
प्रो. सुषमा सिंघवी

प्रकाशक

डी.आर. मेहता
संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
प्राकृत भारती अकादमी,
13-ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर
जयपुर-302017
फोन : 0141-2520230
E-mail : prabharati@gmail.com

रमेश चन्द मुथा
अध्यक्ष
श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ,
मेवानगर, स्टेशन-बालोतरा-344025
जिला-बाड़मेर (राजस्थान)
E-mail : nakodatirth@yahoo.com

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN No. : 978-81-952891-3-4

मूल्य : ₹ 750/-

© प्रकाशक

लेजर टाइप सेटिंग
सरिता वशिष्ठ

सम्पादन-सहयोग
ओमप्रकाश शास्त्री

मुद्रकः
श्री प्रिन्टर्स प्रा.लि.
मालवीय औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर
मो. 9414062321

प्राकृत बृहद् शब्दकोश (खण्ड-1)
डॉ. राजेन्द्र रत्नेश, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. सुषमा सिंघवी
श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर, बाड़मेर
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ,
प्राकृत भारती अकादमी
द्वारा प्रायोजित

प्राकृत बृहद् शब्दकोश

(अर्धमागधी, शौरसैनी, महाराष्ट्री, पैशाची व पाली)
(अपभ्रंश, संस्कृत व हिन्दी के शब्दों सहित)

(खण्ड-2)

सम्पादक
डॉ. राजेन्द्र रत्नेश
प्रो. दामोदर शास्त्री
प्रो. सुषमा सिंघवी

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ,
प्राकृत भारती अकादमी
प्रायोजित

प्राकृत बृहद् शब्दकोश

(अर्धमागधी, शौरसैनी, महाराष्ट्री, पैशाची व पाली)
(अपभ्रंश, संस्कृत व हिन्दी के शब्दों सहित)

(खण्ड-2)

संपादक
डॉ. राजेन्द्र रत्नेश
प्रो. दामोदर शास्त्री
प्रो. सुषमा सिंघवी

प्रकाशक

डी.आर. मेहता
संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
प्राकृत भारती अकादमी,
13-ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर
जयपुर-302017
E-mail : prabharati@gmail.com

रमेश चन्द मुथा
अध्यक्ष
श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ,
मेवानगर, स्टेशन-बालोतरा-344025
जिला-बाड़मेर (राजस्थान)
E-mail : nakodatirth@yahoo.com

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN No. : 978-93-92317-07-1

मूल्य : ₹ 750/-

© प्रकाशक

लेजर टाइप सेटिंग
सरिता वशिष्ठ

सम्पादन-सहयोग
ओमप्रकाश शास्त्री

मुद्रकः
श्री प्रिन्टर्स प्रा.लि.
मालवीय औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर
मो. 9414062321

प्राकृत बृहद् शब्दकोश (खण्ड-2)
डॉ. राजेन्द्र रत्नेश, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. सुषमा सिंघवी
श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर, बाड़मेर
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

आचार्य महाश्रमण

विविध आयामी अवदान

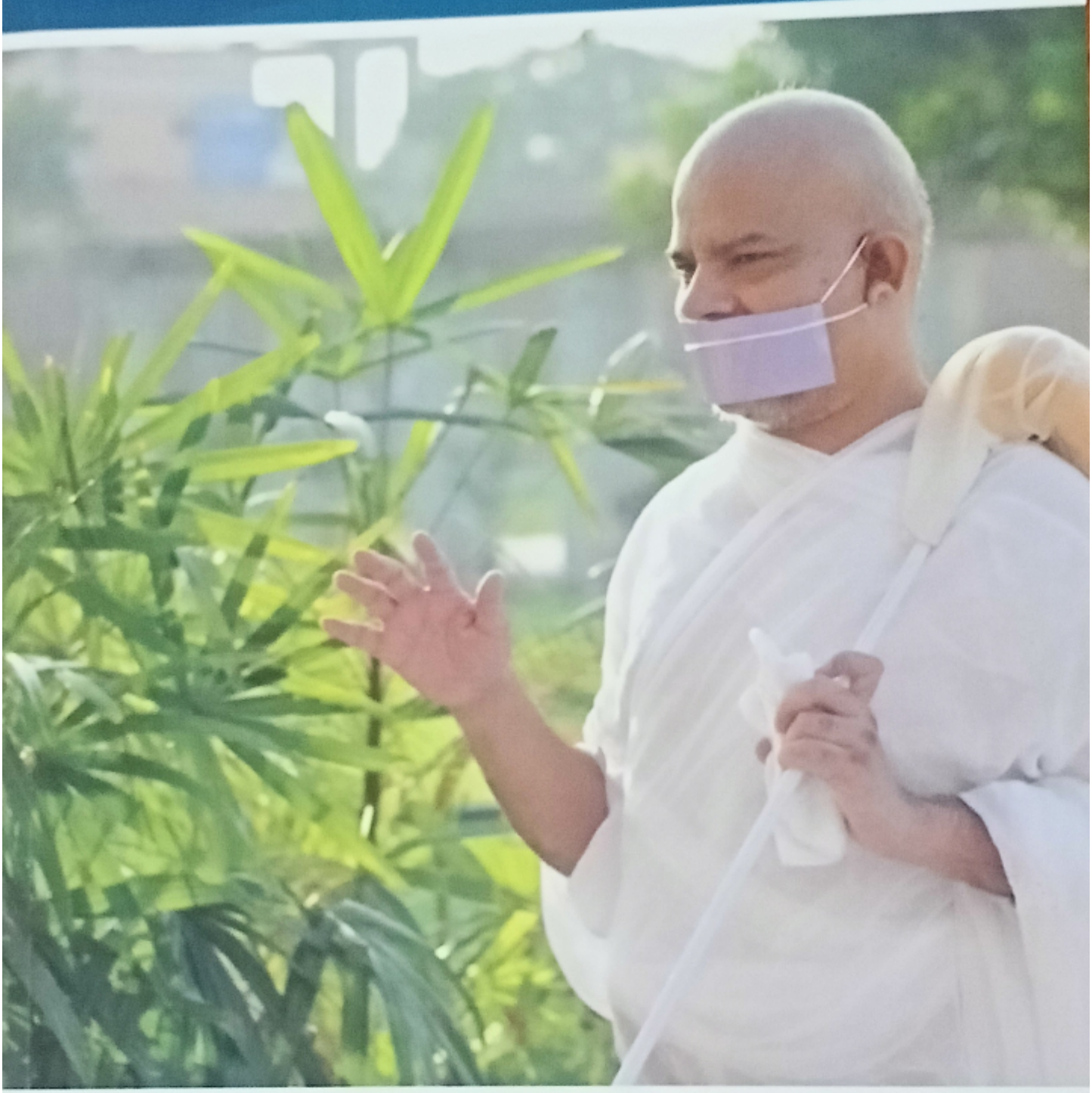

जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं-341 306 (राजस्थान)

शीर्षक : आचार्य महाश्रमण विविध आयामी अवदान

कॉपीराइट : जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

संस्करण : 2022 (प्रथम)

मूल्य : 400/-

ISBN : 978-93-83634-77-4

मुद्रक : मैसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर

प्रकाशक -
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं - 341 306, नागौर, राजस्थान

आचार्य महाश्रमण

विविध आयामी अवदान

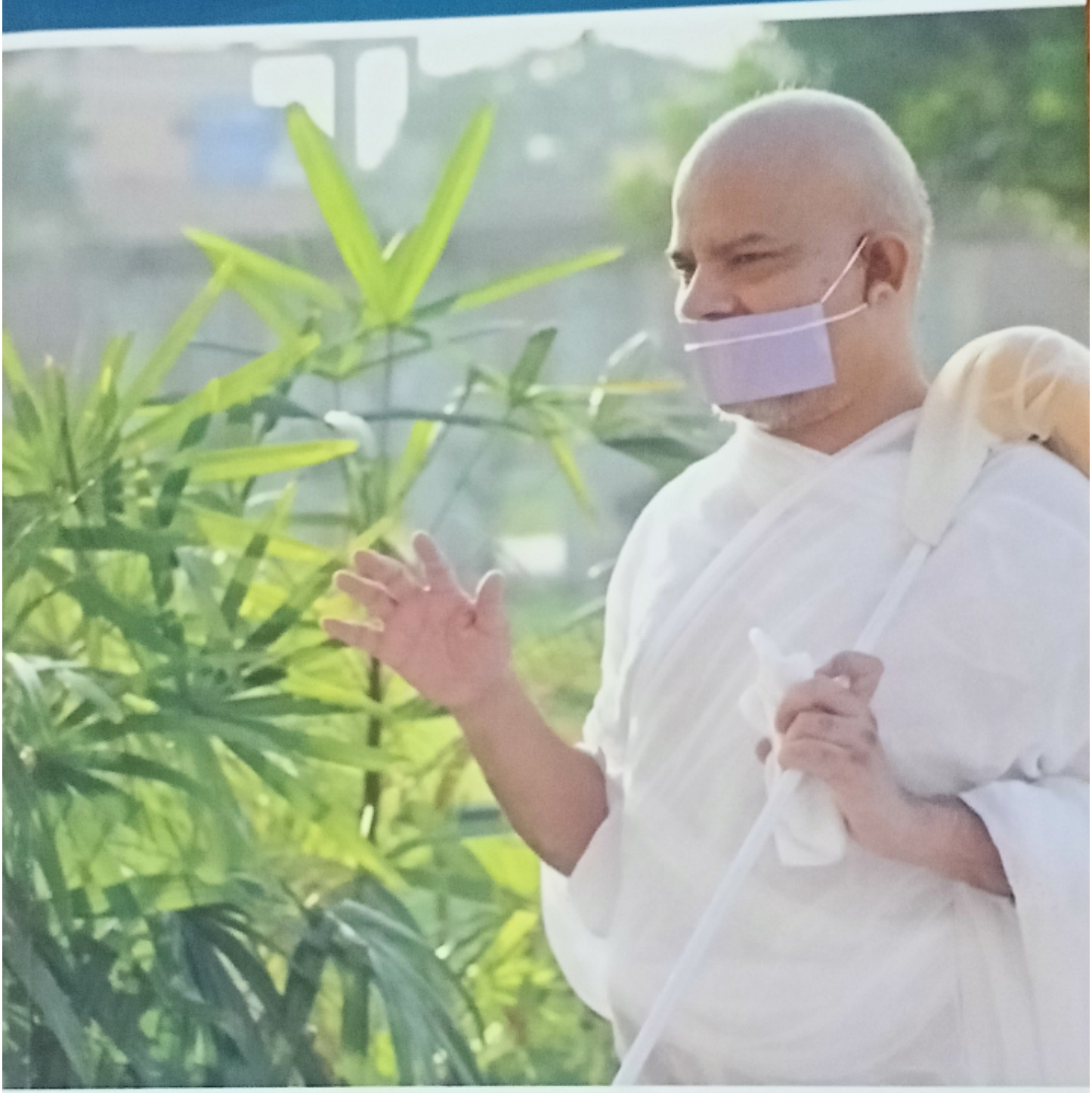

जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं-341 306 (राजस्थान)

शीर्षक : आचार्य महाश्रमण विविध आयामी अवदान

कॉपीराइट : जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

संस्करण : 2022 (प्रथम)

मूल्य : 400/-

ISBN : 978-93-83634-77-4

मुद्रक : मैसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर

प्रकाशक -
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं - 341 306, नागौर, राजस्थान

विषय सूची

क्र.सं.	आलेख का नाम एवं लेखक	पृ. सं.
1.	आचार्य महाश्रमण के साहित्य में मैत्री ***प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र***	01-07
2.	आचार्यश्री के प्रमुख चिन्तनों का आधार : आगम-साहित्य ***प्रो. दामोदर शास्त्री***	08-24
3.	आचार्यश्री के चिन्तन में 'पुरुषार्थ' की अवधारणा ***प्रो. गोपीनाथ शर्मा***	25-34
4.	आचार्य महाश्रमण की सत्यान्वेषी दृष्टि ***प्रो. धर्मचन्द जैन***	35-50
5.	बौद्धदर्शन एवं जैनदर्शन में मोक्ष/ निर्वाण एवं आचार्य महाश्रमण की दृष्टि ***प्रो. विजयकुमार जैन***	51-65
6.	जनकल्याण के लिए प्रतिपल नियोजित : महामना आचार्य महाश्रमण ***प्रो. (डॉ.) नलिन के. शास्त्री***	66-83
7.	आचार्य महाश्रमण के चिन्तन में 'निष्काम कर्म' ***प्रो. सत्य प्रकाश दुबे***	84-90
8.	आचार्य महाश्रमण के साहित्य में कलात्मक जीवन के सूत्र ***प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई***	91-100
9.	सदाचार के प्रेरक आचार्य महाश्रमण ***प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा***	101-105
10.	आचार्यश्री के चिन्तन में 'सम्यक्त्व' ***प्रो. धर्मचन्द्र जैन, कुरुक्षेत्र***	106-111

आचार्यश्री के प्रमुख चिन्तनों का आधार : आगम-साहित्य

प्रो. दामोदर शास्त्री*

जैन दार्शनिक परम्परा प्रमुखतया तीन विशिष्ट तत्त्वों पर केन्द्रित है। वे तत्त्व हैं देव, गुरु व शास्त्र। परमाराध्य वीतराग आत्मा 'देव' रूप से मान्य है। उनके द्वारा उपदिष्ट धर्म-उपदेश 'शास्त्र' हैं, जो धर्म-सम्बन्धी व्याख्यान के लिए प्रमाणभूत हैं। धर्म-मार्ग की उत्कृष्ट साधना के बल पर सतत अग्रेसर होने वाला साधक 'साधु' गुरु है। धर्म-पथ पर चलने वाले के लिए एक मार्गनिर्देशक की महत्ता सर्वविदित है, वह कार्य साधु के माध्यम से संभव होता है। साधु स्वयं आत्मकल्याण में तो तत्पर रहता ही है, यथासम्भव परकल्याण भी करता है। ज्ञानध्यानतपोमय आत्मकल्याणपरक क्रियाओं[1] के अतिरिक्त, संघीय शिष्यानुशासन, प्रवचन, सत्साहित्यलेखन आदि की क्रियाएं भी उसकी दिनचर्या का अंग होती हैं।[2] संघीय परिधि में उक्त उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए वह साधु ही उपाध्याय व आचार्य- इन रूपों में पदासीन होते हुए तीन पूज्य परमेष्ठी पदों पर आसीन होता है।

परमगुरु साधु या आचार्य के धर्म-प्रवचन व सत्साहित्य-सृजन का आधार-स्रोत या प्रेरणा-स्रोत 'शास्त्र' या 'आगम' होता है, जो परमदेव अर्हन्त जिनेन्द्र तीर्थंकर की देशना पर आधारित और उससे अनुप्राणित होता है। इस प्रकार 'गुरु' देव व शास्त्र इन दो से जुड़ा हुआ होता है। इसी दृष्टि से साधु को 'आगमचक्खु' कहा गया है।[3] तात्पर्य यह है कि साधु 'आगम' के माध्यम से देखते हैं, चिन्तन करते हैं और प्रवचन करते हैं।

---

*अध्यक्ष, प्राकृत-संस्कृत विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं-341306 (राजस्थान)

आचार्य नेमिचन्द्र प्रणीत

प्रवचनसारोद्धार

(मूल पाठ, हिंदी अनुवाद तथा अनेक परिशिष्ट सहित)

भगवान महावीर
ई. पू. 599-527

निदेशक

आचार्य महाप्रज्ञ
आचार्य महाश्रमण

सम्पादक/अनुवादक :

प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा

प्रकाशक :
आदर्श साहित्य विभाग
जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं–341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 226080, 224671
ई–मेल : books@jvbharati.org

Books are available online at
https://books.jvbharati.org

© जैन विश्व भारती, लाडनूं
प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2022 (250 प्रतियां)

पृष्ठ संख्या : 514 + 22 = 536

मूल्य : ₹ 1500/- (एक हजार पांच सौ रुपये मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

आचार्य महाश्रमण

विविध आयामी अवदान

जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं-341 306 (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

आचार्य महाश्रमण
विविध आयामी अवदान

सम्पादक
प्रो. दामोदर शास्त्री
प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं - 341 306, नागौर, राजस्थान

Scanned with CamScanner

शीर्षक : आचार्य महाश्रमण विविध आयामी अवदान

कॉपीराइट : जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

संस्करण : 2022 (प्रथम)

मूल्य : 400/-

ISBN : 978-93-83634-77-4

मुद्रक : मैसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर

प्रकाशक -
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं - 341 306, नागौर, राजस्थान

विषय सूची

क्र.सं.	आलेख का नाम एवं लेखक	पृ. सं.
1.	आचार्य महाश्रमण के साहित्य में मैत्री ***प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र***	01-07
2.	आचार्यश्री के प्रमुख चिन्तनों का आधार : आगम-साहित्य ***प्रो. दामोदर शास्त्री***	08-24
3.	आचार्यश्री के चिन्तन में 'पुरुषार्थ' की अवधारणा ***प्रो. गोपीनाथ शर्मा***	25-34
4.	आचार्य महाश्रमण की सत्यान्वेषी दृष्टि ***प्रो. धर्मचन्द जैन***	35-50
5.	बौद्धदर्शन एवं जैनदर्शन में मोक्ष/ निर्वाण एवं आचार्य महाश्रमण की दृष्टि ***प्रो. विजयकुमार जैन***	51-65
6.	जनकल्याण के लिए प्रतिपल नियोजित : महामना आचार्य महाश्रमण ***प्रो. (डॉ.) नलिन के. शास्त्री***	66-83
7.	आचार्य महाश्रमण के चिन्तन में 'निष्काम कर्म' ***प्रो. सत्य प्रकाश दुबे***	84-90
8.	आचार्य महाश्रमण के साहित्य में कलात्मक जीवन के सूत्र ***प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई***	91-100
9.	सदाचार के प्रेरक आचार्य महाश्रमण ***प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा***	101-105
10.	आचार्यश्री के चिन्तन में 'सम्यक्त्व' ***प्रो. धर्मचन्द्र जैन, कुरुक्षेत्र***	106-111

Scanned with CamScanner

11. आचार्यश्री की दृष्टि में 'प्रत्याख्यान-अप्रत्याख्यान' 112-121
प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन

12. आचार्य महाश्रमण की दृष्टि में गीता और उत्तराध्ययन के विषयों में साम्य-वैषम्य 122-130
प्रो. (डॉ.) श्रेयांस कुमार जैन

13. आचार्य महाश्रमण साहित्य में 'नवधा भक्ति' 131-144
प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा

14. आचार्य महाश्रमण के चिन्तन में 'पाप-निवृत्ति' 145-154
डॉ. जयकुमार जैन

15. आचार्य महाश्रमण की दृष्टि में आचार्यश्री महाप्रज्ञ 155-162
प्रो. धर्मचन्द जैन

16. सुखी कैसे रहें ? : आचार्य महाश्रमण की संत-दृष्टि 163-170
नरेश शांडिल्य

17. अप्रमत्त आलोक के धनी आचार्य महाश्रमण 171-179
प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा

18. आचार्य महाश्रमण के साहित्य में 'स्थितप्रज्ञता' 180-197
प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह, डॉ. जोगेन्द्र मित्र

19. आचार्य महाश्रमण का नैतिक दर्शन 198-208
प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'

20. समता का जैन दृष्टिकोण और आचार्य महाश्रमण 209-215
प्रो. अनेकांत कुमार जैन

21. आचार्य महाश्रमण के चिन्तन में संवेग 216-223
प्रो. बी.एल. जैन

22. Sufferings and being free from Sufferings – in the views of Ācārya Mahāśramaṇ 224-236
Prof. Jagat Ram Bhattacharyya

Scanned with CamScanner

आचार्य महाश्रमण का नैतिक दर्शन

प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'*

आचार्य महाश्रमण जैन श्वेताम्बर तेरापंथ जैसे विशाल धर्मसंघ के आचार्य तो हैं ही, इसके साथ-साथ उन्हें राष्ट्रीय संत, परिव्राजक, समाज सुधारक एवं अध्यात्मशिरोमणि के रूप में जाना जाता है। एक पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में भी उनकी पहचान है। पाश्चात्य विचारक हेगल ने 'पूर्ण व्यक्तित्व' की विशेषता बतलाते हुए कहा था कि पूर्ण व्यक्तित्व वह है, जिसकी चेतना निरासक्त हो चुकी है, जिनका समन्वय, समभाव एवं सहअस्तित्व में अटूट विश्वास हो। इस कसौटी पर जब हम आचार्यश्री महाश्रमण के व्यक्तित्व की परख करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनका व्यक्तित्व सचमुच एक पूर्ण व्यक्तित्व है। इनमें रामकृष्ण परमहंस की अन्तर्मुखता, विवेकानन्द का समर्पणभाव, गान्धीजी की लोककल्याणकारी दृष्टि, राधाकृष्ण का सार्वभौमिक चिन्तन, रवीन्द्रनाथ टैगोर की वैश्विकता, काण्ट की नैतिकता में पूर्ण आस्था का समन्वय दृष्टिगोचर होता है। तीर्थंकर भगवान महावीर की स्तुति करते हुए आचार्य हेमचन्द्र ने लिखा है-

''पन्नगे च सुरेन्द्रे च कोशिके पादसंस्पृशि।
निर्विशेषमनस्काय, श्रीवीरस्वामिने नमः''।।[1]

एक तरफ चण्डकौशिक जहाँ भगवान महावीर को भयकंर उपसर्ग दे रहा था, वहीं दूसरी तरफ इन्द्र भगवान उनकी सेवा कर रहे थे, किन्तु भगवान महावीर को न तो चण्डकौशिक के प्रति द्वेष था और न इन्द्र के प्रति राग था। उनके मन में दोनों के प्रति एक जैसा भाव था। इस प्रकार का भाव वही रख सकता है, जिसकी चेतना निरासक्त हो चुकी हो। आचार्यश्री महाश्रमण अपने प्रत्येक

*निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

प्रवचन के पूर्व में न केवल इस पद का संगान करते हैं, अपितु इस पद को जीते भी हैं।

इसीलिए पूर्ण व्यक्तित्व को दूसरे शब्दों में नैतिक व्यक्तित्व भी कहा जा सकता है। नैतिकता किसी भी व्यक्तित्व की पूर्णता की कसौटी है। प्रायः सभी भारतीय चिन्तकों ने अपने नैतिक विचारों से मानव जीवन का श्रृंगार किया है। **विवेकानन्द** के अनुसार नैतिकता व्यक्ति के जीवन को पवित्र बनाती है। **गान्धीजी** के अनुसार नैतिक सिद्धान्तों को जीवन में उतारने से इहलोक और परलोक सुधरता है। आचार्य महाप्रज्ञ के अनुसार नैतिकता आध्यात्मिक जीवन की कसौटी है। भारतीय चिन्तकों, दार्शनिकों, एवं विचारकों द्वारा मोक्ष को जीवन का चरमलक्ष्य माना गया है और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नैतिक जीवन को आवश्यक माना गया है अर्थात् नैतिकता को मोक्षमार्ग के रूप में स्वीकार किया गया है। आचार्यश्री तुलसी धार्मिकता एवं नैतिकता में कोई भेद नही करते हैं। वह कहते हैं- 'धार्मिक है पर नहीं कि नैतिक, बहुत बड़ा विस्मय है।' जहां भारतीय विचारक एकमत से परमशुभ के रूप में मोक्ष को मानते है, वहीं पाश्चात्य विचारकों में परमशुभ को लेकर अन्तर दिखाई पड़ता है। बेन्थम, मिल और सिजविक सुख को ही जीवन का चरमलक्ष्य मानते हैं। काण्ट 'सदिच्छा' को, बटलर 'अन्तर्बोध' को, नीत्शे 'अतिमानव' को, ब्रेडले 'सर्वकल्याण' को परमशुभ मानते हैं। भारतीय विचारकों की तरह आचार्य महाश्रमण भी मोक्ष को परमशुभ के रूप में स्वीकार करते हैं।

आचार्यश्री के नैतिक विचारों पर दृष्टिपात करने से पूर्व, प्रश्न उठता है कि नीतिशास्त्र क्या है? इसे अंग्रेजी में 'एथिक्स' कहते हैं। 'एथिक्स' शब्द ग्रीक शब्द 'एथास' से बना है, जिसका अर्थ होता है चरित्र। अतः एथिक्स का अर्थ हुआ चरित्र या आचरण सम्बन्धी शास्त्र।[2] मनुष्य का आचरण ही उसके चरित्र का परिचायक होता है। आचार्य महाश्रमण यह मानते हैं कि यदि व्यक्ति का आचरण अच्छा होगा तो उसका चरित्र भी अच्छा होगा और यदि उसका आचरण खराब होगा तो उसका चरित्र भी खराब होगा। उनके अनुसार आचरण ही चरित्र की कसौटी है।[3] आचार्य महाश्रमण के अनुसार मूल्य यानी श्रेष्ठता। व्यक्ति जिस

Scanned with CamScanner

क्षेत्र मे रहे या काम करे, उसमे श्रेष्ठता हासिल करे। शिक्षा के क्षेत्र में यदि श्रेष्ठता आ जाये, तो वह मूल्यपरक शिक्षा के रूप प्रतिष्ठित हो सकती है। साधना के क्षेत्र में यदि श्रेष्ठता आ जाए, तो व्यक्ति आत्मसाक्षात्कार की भूमिका तक पहुंच सकता है। जीवन में अनेक तरह के मूल्य हो सकते हैं, जो इस प्रकार हैं[4]- शारीरिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, मनोरंजक मूल्य, सामाजिक मूल्य, चारित्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, बौद्धिक मूल्य एवं धार्मिक मूल्य। आचार्यश्री की मूल्य सम्बन्धी यह दृष्टि नैतिकता की सूचक है। सुकरात के अनुसार नीतिशास्त्र अथवा नैतिक मूल्यों के अन्तर्गत सद्गुणों का अध्ययन किया जाता है। उनके अनुसार ज्ञान से बढ़कर कोई सद्गुण नहीं है। सुकरात ''ज्ञान'' को सद्गुण मानता है, तो प्लेटो बुद्धिमत्ता, साहस, आत्मसंयम और न्याय के रूप में चार सद्गुण स्वीकार करता है। अरस्तु सद्गुणों की संख्या सीमित नहीं करता, किन्तु जो सद्गुणों को मध्यम प्रतिपदा के रूप में स्वीकार करता है, जैसे विनम्रता, जो उद्दण्डता एवं चापलूसी के बीच की स्थिति है। ये सभी विचारक नीतिशास्त्र को 'सत् का विज्ञान' मानते है। बेंथम मिल एवं सिजविक नीतिशास्त्र को शुभ का विज्ञान मानते हैं। मेकेन्जी ने नीतिशास्त्र को सत् एवं शुभ दोनों का विज्ञान माना है। काण्ट ने इसे नियम का विज्ञान माना है। उसके अनुसार नैतिक नियम प्रत्येक स्थिति में पालन किये जाने चाहिएं। 'सत बोलना' यदि नैतिक नियम है, तो हर स्थिति में उसकी पालना होनी चाहिए। काण्ट नैतिकता का कोई अपवाद नहीं मानता है। आचार्य भिक्षु भी नैतिकता का अपवाद नहीं मानते हैं। आचार्य महाश्रमण भी नैतिक नियमों एवं मर्यादाओं के पालन पर बल देते हैं। आचार्यश्री के अनुसार नैतिक नियम व्यक्ति के लिए सुरक्षा कवच हैं। इनके माध्यम से व्यक्ति अपने आपको बुराइयों से बचा सकता है। काण्ट और आचार्यश्री के विचारों में नैतिक नियमों को निरपेक्ष आदेश के रूप में माना जा सकता है, किन्तु आचार्यश्री के विचारों में प्रायश्चित् के लिए अवकाश है, जो काण्ट के दर्शन में दृष्टिगोचर नहीं होता है।

आचार्यश्री के अनुसार जीवन एक सच्चाई है। संसार का प्रत्येक प्राणी जीवन जीता है, मगर जीवन जीने में बहुत अन्तर हो जाता है। महत्त्वपूर्ण बात

यह नहीं कि कौन व्यक्ति कितना जीवन जीता है? महत्त्वपूर्ण यह है कि कौन व्यक्ति कैसा जीवन जीता है? **आओ हम जीना सीखें** पुस्तक में आचार्य श्री लिखते हैं कि मानव जीवन बहुत कीमती है। इसको संजाने-संवारने के लिए छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। कैसे उठना, कैसे बैठना, कैसे चलना, कैसे बोलना आदि बातें देखने में बहुत छोटी लगती हैं, पर जीवन महल को खड़ा करने वाली नींव की ईंटें भी यही हैं।[5] 'कैसा' शब्द से आशय नैतिकतापूर्ण जीवन जीने से है। अर्थात् जीवन जीने के लिए नैतिक मूल्यों की आवश्यकता होती है। ये नैतिक मूल्य जीवन जीने की कसौटी निर्धारित करते हैं। आचार्यश्री ने अच्छा जीवन जीने के लिए जिन सद्गुणों का उल्लेख किया है, वे इस प्रकार हैं- समता, आत्मानुशासन, भावशुद्धि, संयम, कर्त्तव्यनिष्ठा, अनासक्ति, निष्कामप्रवृत्ति, मैत्री, स्थितप्रज्ञता इत्यादि।

समता:- आचार्यश्री के अनुसार समता का अभ्यास प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। किसान को अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि की मार पड़ती है। दोनों ही स्थितियां उसके लिए कष्टकर होती हैं। उन स्थितियों में किसान समताभाव रखकर अपने जीवन की सुरक्षा कर सकता है। व्यापारी को लाभ-हानि, योद्धा को जय-पराजय एवं योगी को सुख-दु:ख में समताभाव की आराधना करनी चाहिए। आयारो में भी कहा गया है कि **'समयं तत्थुवेहाए, अप्पाणं विप्पसायए'** अर्थात् समता का आचरण चित्त की प्रसन्नता का हेतु बनता है। गीता भी कहती है-

''सुख-दु:खे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युध्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।''[6]

साधु और गृहस्थ दोनों के लिए समता धर्म है। आचार्यश्री के अनुसार समता धर्म है और विषमता अधर्म है।[7] आचार्यश्री **रोज की एक सलाह** में 20 दिसम्बर की सलाह में कहते हैं कि व्यक्ति प्रसन्नता का आकांक्षी रहता है, परन्तु वास्तविक और स्थायी प्रसन्नता तब प्राप्त हो सकती है, जब आदमी समता का अभ्यास कर लेता है। उनके अनुसार समता एवं प्रसन्नता एक दूसरे के पूरक हैं, अत: समता आचरणीय है।

Scanned with CamScanner

आत्मानुशासन- अनुशासन परमतत्त्व है, वह जीवन में आ जाता है तो आदमी का जीवन खुशहाल हो जाता है और अपने जीवन में वह शांति का अनुभव भी कर सकता है। अनुशासन दो प्रकार का होता है- प्रथम दूसरों पर अनुशासन और द्वितीय स्वयं पर अनुशासन। आचार्यश्री कहते हैं कि पर अनुशासन अनैतिक है तो स्व-अनुशासन नैतिक है। जो अपने आप पर अनुशासन करता है, वह व्यक्ति सुखी बनता है। वह इस लोक में भी सुखी होता है और अगले जीवन में भी सुखी बनता है। इसलिए आत्मानुशासन श्रेष्ठ सद्गुण है। आत्मानुशासित व्यक्ति को कभी दिशानिर्देश देने की अथवा टोकने की जरूरत नहीं पड़ती है। वह निरन्तर स्वप्रेरित होकर अपने कार्य की क्रियान्विति करता है। आचार्यश्री के अनुसार जो अपनी आत्मा पर अनुशासन करता है, सही मायने में वह अपने आप पर अनुशासन करता है और वह सुखी बनता है। वह इस लोक में शीघ्र सुखी होता है और अगले जीवन में भी सुखी बनता है। इसलिए मनुष्य को आत्मानुशासन का प्रयास करना चाहिए।[8] **रोज की एक सलाह** में आचार्यश्री 12 जुलाई की सलाह में आत्मनुशासन के बारे में कहते हैं कि आत्मा पर सीधा अनुशासन करने का प्रयास मत करो। शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों पर अनुशासन करो। उसका फलित होगा आत्मानुशासन।

भावशुद्धि- अच्छे जीवन जीने के लिए आचार्यश्री भावशुद्धि को आवश्यक मानते हैं। सामने कुछ और परोक्ष में कुछ, ऐसा नहीं होना चाहिए। आचार्यश्री का मानना है कि जहां अशुद्ध भाव आत्मा को अधोगति की ओर ले जाते हैं, वहां शुद्धभाव आत्मा को ऊर्ध्वगति की ओर ले जाते हैं। छलना, माया, क्रोध, झूठ, चोरी, लोभ एवं अहं का भाव, ये सब अशुद्ध भाव हैं। आचार्यश्री का मानना है कि इन अशुभ भावों को रोककर इसके विपरीत शुद्धभावों से भावित होना चाहिए। उनके अनुसार शरीररूपी नाव छोटी भले हो, यदि भाव शुद्ध हो तो वह संसाररूपी समुद्र से पार पहुंच सकती है। **उत्तराध्ययन सूत्र** में भी कहा गया है- **भावे विरत्तो मणुओ विसोगो,** अर्थात् जो भावों में राग-द्वेष नहीं लाता, वह दुःख से रहित हो जाता है। हम शोकमुक्त, दुःखमुक्त तभी बन सकेंगे, जब हमारे भाव बिल्कुल शुद्ध हो जायें। भावों को शुद्ध करने के लिए आचार्यश्री ने

मंत्र और जप के अनेक प्रयोग भी बताए हैं। अपनी पुस्तक **'दुःख मुक्ति का मार्ग'** में उन्होंने भावशुद्धि को जीवन-विकास की प्रक्रिया माना है तथा कायोत्सर्ग एवं दीर्घ श्वास प्रेक्षा के माध्यम से भावशुद्धि पर बल दिया है। आचार्य महाश्रमण तो यहां तक कहते हैं कि जिस-जिस भाव में आदमी शरीर को छोड़ता है, उसी परिणाम में उसकी गति होती है अतः आदमी हमेशा शुभ भावों में रहने का प्रयास करें।[9]

संयम- आचार्यश्री के अनुसार साधना के मार्ग में संयम की साधना बहुत महत्त्वपूर्ण है। व्यावहारिक जीवन में भी एक सीमा तक इन्द्रियों एवं मन का संयम रखना बहुत उपयोगी होता है। इन्द्रिय-संयम अधिक कठिन है उससे भी अधिक कठिन है मन पर संयम। आचार्यश्री तुलसी ने तो 'संयम ही जीवन है' को अणुव्रत आन्दोलन का सूत्र वाक्य निर्धारित किया था। **'संवाद भगवान से'** कृति में आचार्यश्री महाश्रमणजी यह मानते हैं कि संयम से न केवल आन्तरिक समस्याओं का समाधान होता है, अपितु बाह्य समस्याओं का भी समाधान होता है।[10] इसलिए सभी को संयम की साधना करनी चाहिए, क्योंकि संयम सभी प्रकार की समस्याओं का समाधायक है।

कर्त्तव्यनिष्ठा- आचार्यश्री ने अपनी पुस्तक **'सुखी बनो'** में कर्त्तव्यनिष्ठा को श्रेष्ठ सद्गुण माना है। आपका मानना है कि समाज में सबके अलग-अलग कर्त्तव्य होते हैं। राजा का अपना कर्त्तव्य है, गुरू का अपना कर्त्तव्य है, शिष्य का अपना कर्त्तव्य, मालिक का अपना कर्त्तव्य है, डॉक्टर का अपना कर्त्तव्य है, इञ्जीनियर का अपना कर्त्तव्य है। सभी को अपने-अपने कर्त्तव्य की पालना निष्ठापूर्वक करनी चाहिए।[11] आचार्यश्री के अनुसार जो अपने कर्म और कर्त्तव्य में अभिरत है, जागरूक है, वह व्यक्ति सफलता को प्राप्त हो जाता है। यदि पिता, पुत्र के प्रति और पुत्र पिता के प्रति, शिष्य, गुरु के प्रति और गुरु, शिष्य के प्रति, माँ, पुत्र के प्रति तथा पुत्र, माँ के प्रति यदि कर्त्तव्य नहीं निभाता है तो वह कर्त्तव्य से च्युत हो जाता है।[12] गीता में भी कहा गया है कि हे अर्जुन! कर्त्तव्य करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल-प्राप्ति में नहीं। ब्रेडले ने भी 'अपने स्थान के अनुरूप कर्त्तव्य' करने के लिए प्रेरित किया था। इस तथ्य की अभिव्यक्ति जैन ग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र के 'परस्परोपग्रहो जीवनाम्' से भी होती है कि सब अपने कर्त्तव्य

Scanned with CamScanner

के प्रति जागरूक होकर एक दूसरे का सहयोग करें।

अनासक्ति- आदमी जीवन जीता है। वह जीने के लिए प्रवृत्ति करता है। शरीरधारी व्यक्ति प्रवृत्ति-मुक्त नहीं हो सकता। यदि प्रवृत्ति के साथ अनासक्ति को जोड़ दें तो वह प्रवृत्ति पापकर्म के बन्धन से आदमी को बचा सकती है। जहां आसक्ति से पापकर्म का बंध होता है, वहां अनासक्ति से व्यक्ति बन्धनमुक्त होता है। आचार्यश्री ने कहा कि दु:ख का कारण आसक्ति है तो दु:ख मुक्ति का कारण अनासक्ति है। आसक्ति के कीचड़ से निकलने के लिए अनासक्ति के कमल की जरूरत होती है।

यों तो कहा जाता है कि जब तक मानवशरीर है, तब तक क्रियाएं होंगी ही, उनपर अंकुश लगाया नहीं जा सकता। ये क्रियाएं बन्धन की ओर ले जाती हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वे आसक्ति से रहित होकर कार्य करे। आदमी चलने, ठहरने, बात करने, दौड़ने, व्यापार करने जैसी क्रियाएं करता है। यदि इन क्रियाओं के साथ आसक्ति होगी तो परिणाम दु:ख का होगा, किन्तु यदि ये क्रियाएं जागरूक होकर होंगी तो परिणाम अच्छा होगा। दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है-

"जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए।
जयं भुजंतो भासंतो पावं कम्मं न बंधई।।"[13]

अर्थात जागरूकतापूर्वक किये गये कार्य से बंधन नहीं होता है। प्रत्येक कार्य निरासक्त होकर कर्त्तव्यभाव से किये जाने चाहिएं।

निष्काम प्रवृत्ति- आचार्यश्री महाश्रमणजी के अनुसार जहाँ आसक्ति के भाव से किये गये कर्म का संबध बन्धन से होता है, वहीं आसक्ति न रखने से बंधन भी नहीं होता है। एक ही कार्य में कर्म के बंधन में अन्तर आ जाता है।[14] कामनायुक्त कर्म सभी करते हैं। कोई यश की कामना से, कोई धन की कामना से, कोई ज्ञान की कामना से, कोई पद की कामना से कर्म करते हैं। आचार्यश्री का मानना है कि यह सकाम कर्म बन्धन का कारण है। अत: निष्काम प्रवृत्ति से सभी प्रकार के दु:ख दूर होते हैं। **'सुखी बनो'** पुस्तक में आचार्यश्री कहते हैं कि निष्कामभाव से सेवा करना, दूसरों का हित करना, अच्छी प्रवृत्ति करना

कर्मयोग होता है। आचार्यश्री ने साधु के लिए कहा है कि प्रतिबद्ध मत बनो। एक ही जगह रहना है- ऐसा मोह मत करो, घूमते रहो। एक जगह रहने से आसक्ति होती है। आसक्ति साधना में बाधक है।[15]

मैत्री- आचार्यश्री मैत्री गुण को महान मानते हैं। इस गुण के कारण अपने-पराये का भेद मिट जाता है। कोई शत्रु नहीं रह जाता है, सभी मित्र बन जाते हैं। उत्तराध्ययन में भी कहा गया है कि सभी प्राणियों के साथ मैत्री करो। शांत सुधार संभावना में मैत्री को परिभाषित करते हुए कहा गया है- **'मैत्री परेषां हितचिन्तनं यत्'** अर्थात् दूसरों का हितचिन्तन करना ही मैत्री है। **'मित्ति मे सव्वभूएसु'** जैसे आगमवाक्य भी कहते हैं कि सभी प्राणियों के प्रति मैत्री का भाव रखना चाहिए। आचार्यश्री **'सम्पन्न बनो'** पुस्तक में कहते हैं कि यदि आदमी मैत्रीसम्पन्न बने तो उसकी साधना सिद्ध हो सकेगी।

धैर्य- आचार्यश्री के अनुसार जीवन में धैर्य की शक्ति सब में होनी चाहिए। धैर्य से अनेक समस्याएं स्वत: समाहित हो जाती हैं। धैर्यवान व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों को जीतकर सफल हो जाता है, किन्तु अधैर्यवान् व्यक्ति छोटी सी समस्या आने पर निराश एवं हताश होकर प्राणान्त तक कर लेता है। **'विजयी बनो'** पुस्तक में आचार्यश्री का मानना है कि विपत्ति में धैर्य ही संबल देता है।[16] उनके अनुसार जिसमें धृति होती है, उसकी आत्मा निर्मल रहती है और जिसमें धृति का अभाव होता है, वह व्यक्ति संकल्पों-विकल्पों के वशीभूत होकर पग-पग पर विषादग्रस्त हो जाता है। अस्तु, हमारी धृति इतनी सुन्दर, स्वच्छ और सात्विक हो कि हमारे भीतर अपने मन, प्राण और इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने की शक्ति विकसित हो जाये।

इसके अतिरिक्त, आचार्यश्री ने अपनी पुस्तक **'सम्पन्न बनो'** में योग सम्पन्न (पाठ-17), स्वरूप सम्पन्न (पाठ-18), भक्ति सम्पन्न (पाठ-19), अध्यात्म सम्पन्न (पाठ-21), साधना सम्पन्न (पाठ-16), शांति सम्पन्न (पाठ-29), विवेक सम्पन्न (पाठ-36), आलोक सम्पन्न (पाठ-35), सम्बुद्धि सम्पन्न (पाठ-28) कह कर जीवन के विकास पर बल दिया है। आचार्यश्री के अनुसार तीन नकारात्मक शब्द हैं- अनावेश, अनासक्ति और अनाग्रह। ये तीन

Scanned with CamScanner

नकारात्मक शब्द अर्थवत्ता की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी सद्गुण कहे जा सकते हैं।[17] व्यक्ति यदि आवेशरहित, आसक्तिरहित और आग्रहरहित हो जाये तो उसका कहना ही क्या? **'रश्मियां आर्हत वाङ्मय की'** पुस्तक में आचार्यश्री ने इन्हें आध्यात्मिक जीवन-शैली के रूप में स्वीकार किया है। आचार्यश्री के अनुसार एक नास्तिक व्यक्ति भी नैतिक हो सकता है, क्योंकि वह समाज में रहता है, लोगों से उसका सम्पर्क होता है। उसके सामने भी समस्याएं आती हैं। वह समस्याओं को समाहित करना चाहता है। वह दु:खों से मुक्त होना चाहता है। अपने जीवन को समस्याओं से रहित एवं खुशहाल बनाने के लिए उसे नैतिक मूल्यों की अपेक्षा होती है। इसलिए आचार्यश्री का मानना है कि प्रत्येक मानव की प्रसन्नता के लिए उसे नैतिक मूल्यों की आवश्यकता होती है, चाहे वह नास्तिक ही क्यों न हो? अत: नैतिक मूल्य सभी के लिए आवश्यक एवं प्रासंगिक हैं। **'संवाद भगवान् से'** ग्रन्थ में आचार्यश्री ने आध्यात्मिक मूल्य निर्लोभता, प्रामाणिकता, कर्त्तव्यपालन, विनम्रता, सरलता, सच्चाई एवं कथनी-करनी में संगति स्थापित करने पर बल दिया है। ये मूल्य आध्यात्मिक क्षितिज पर खड़े होकर समूची दुनियां और उससे जुड़ी परिस्थितियों को समझने में सहयोगी बनते हैं। नैतिक मूल्य केवल व्यक्तिगत ही नहीं, सम्पूर्ण मानव जाति के सामने खड़ी समस्याओं का समाधान करते हैं। आज अर्थ के पीछे मानव भाग रहा है। आचार्यश्री उन्हें सावचेत करते हुए कहते हैं कि अर्थ के अर्जन में नैतिकता, रक्षण में अनासक्ति और उपयोग में संयम व विवेक हो तो अर्थ सार्थक हो सकता है।

नैतिकता की तीन मान्यताएं-

इमेन्युअल काण्ट ने नैतिकता के लिए जिन तीन मान्यताओं को आवश्यक माना है, वे इस प्रकार हैं-

1. संकल्प की स्वतन्त्रता
2. आत्मा की अमरता
3. ईश्वर में आस्था

आचार्यश्री महाश्रमण उपर्युक्त तीन मान्यताओं में अन्तर करते हैं।

उनके अनुसार नैतिक निर्णयों के लिए संकल्प की स्वतन्त्रता आवश्यक है, क्योंकि यदि लालच देकर, भयभीत करके, दबाव डालकर किसी से कोई कार्य कराया जाता है, तो नैतिकता की कसौटी का निर्धारण कैसे होगा? अत: नैतिक निर्णयों के लिए संकल्प की स्वतन्त्रता आवश्यक है। आत्मा की अमरता की मान्यता से नैतिकता प्रेरित होती है, यह सही है किन्तु, ईश्वर में आस्था से नैतिकता का क्या सम्बन्ध है? ईश्वर में आस्था रखने वाले अनेक लोगों को अनैतिक कार्य करते हुए देखा जा सकता है। अत: आचार्यश्री ईश्वर में आस्था के स्थान पर कर्म में आस्था आवश्यक मानते हैं। कर्म में आस्था होने पर व्यक्ति को कर्मफल की चिन्ता रहती है, अत: बुरे कर्म से व्यक्ति बचने की कोशिश करता है।[18] जैनाचार्य होने के कारण आचार्यश्री की दृष्टि जैन सिद्धान्तों के अनुरूप दृष्टिगोचर होती है। अत: आचार्यश्री की दृष्टि में नैतिकता की तीन मान्यताएं इस प्रकार हैं-

1. संकल्प की स्वतन्त्रता
2. आत्मा की अमरता
3. कर्म में आस्था

अस्तु, यह कहना प्रासंगिक होगा कि आचार्यश्री का नैतिक चिन्तन प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। अपनी दीर्घकालीन अहिंसा यात्रा के जो तीन लक्ष्य आचार्यश्री ने निर्धारित किये हैं, उनमें भी प्रथम दो-नैतिकता और सद्भावना का सम्बन्ध आचार्यश्री के नैतिक चिन्तन से ही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आचार्यश्री की दृष्टि में नैतिकता का अत्यन्त महत्त्व है।

Scanned with CamScanner

संदर्भ

1. आचार्य तुलसी- 'संयममय जीवन' गीत की पंक्ति
2. नीतिशास्त्र की रूपरेखा, डॉ. रजनी कपूर, पृ. 2 (एशिया प्रकाशन, इलाहाबाद), 1966
3. शेमुषी, आचार्य महाश्रमण, पृ. 105, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 2021
4. क्या कहता है जैन वाङ्मय- आचार्य महाश्रमण, पृ. 70, 2019
5. आओ हम जीना सीखें- आचार्यश्री महाश्रमण, पृ. 13, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 2019
6. भगवद्गीता, 2/38
7. संपन्न बनो- आचार्यश्री महाश्रमण, पृ. 128, आदर्श साहित्य विभाग, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 2021
8. सुखी बनो- आचार्यश्री महाश्रमण, पृ. 14, आदर्श साहित्य विभाग, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 2021
9. संपन्न बनो- आचार्यश्री महाश्रमण, पृ. 90
10. संवाद भगवान् से, भाग-1 - आचार्यश्री महाश्रमण, पृ.131
11. सुखी बनो- आचार्यश्री महाश्रमण, पृ. 66-67
12. विजयी बनो- आचार्यश्री महाश्रमण, पृ. 124, आदर्श साहित्य विभाग, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 2020
13. दशवैकालिक सूत्र, चतुर्थ अध्ययन, 31
14. सुखी बनो- आचार्यश्री महाश्रमण, पृ. 145
15. वहीं पृ. 71
16. विजयी बनो- आचार्यश्री महाश्रमण, पृ.106
17. आचार्य महाश्रमण, दुःख मुक्ति का मार्ग-आध्यात्मिक जीवन शैली
18. सुखी बनो- आचार्यश्री महाश्रमण, पृ. 67

Scanned with CamScanner

आचार्य महाश्रमण

विविध आयामी अवदान

जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं-341 306 (राजस्थान)

11. आचार्यश्री की दृष्टि में 'प्रत्याख्यान-अप्रत्याख्यान' 112-121
प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन

12. आचार्य महाश्रमण की दृष्टि में गीता और उत्तराध्ययन के विषयों में साम्य-वैषम्य 122-130
प्रो. (डॉ.) श्रेयांस कुमार जैन

13. आचार्य महाश्रमण साहित्य में 'नवधा भक्ति' 131-144
प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा

14. आचार्य महाश्रमण के चिन्तन में 'पाप-निवृत्ति' 145-154
डॉ. जयकुमार जैन

15. आचार्य महाश्रमण की दृष्टि में आचार्यश्री महाप्रज्ञ 155-162
प्रो. धर्मचन्द जैन

16. सुखी कैसे रहें ? : आचार्य महाश्रमण की संत-दृष्टि 163-170
नरेश शांडिल्य

17. अप्रमत्त आलोक के धनी आचार्य महाश्रमण 171-179
प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा

18. आचार्य महाश्रमण के साहित्य में 'स्थितप्रज्ञता' 180-197
प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह, डॉ. जोगेन्द्र मित्र

19. आचार्य महाश्रमण का नैतिक दर्शन 198-208
प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'

20. समता का जैन दृष्टिकोण और आचार्य महाश्रमण 209-215
प्रो. अनेकांत कुमार जैन

21. आचार्य महाश्रमण के चिन्तन में संवेग 216-223
प्रो. बी.एल. जैन

22. Sufferings and being free from Sufferings – in the views of Ācārya Mahāśramaṇ 224-236
Prof. Jagat Ram Bhattacharyya

आचार्य महाश्रमण के चिन्तन में संवेग

प्रो. बी.एल. जैन*

प्रस्तावना

मनोविज्ञान के तीन क्षेत्र हैं- संज्ञान, संकल्पशक्ति तथा संवेग। संवेगों को क्रिया का मुख्य स्रोत माना जाता है। क्रोध, भय, आनन्द व उल्लास, ईर्ष्या, प्रेम, हर्ष, प्रसन्नता, उदासीनता तथा विषाद, आश्चर्य आदि हमारे जीवन के प्रमुख संवेग हैं। मनोवैज्ञानिकों ने संवेग को अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया है, जिसके विषय में विभिन्न मन्तव्य दिये गये हैं- क्रियाओं का उत्तेजक, क्रियाओं की प्रतिक्रियाएं, जटिल भाव की अवस्था, शारीरिक एवं ग्रन्थीय क्रियाएं, प्राणी की उत्तेजित अवस्था, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दशा, गतिशील आंतरिक समायोजन, शक्तिशाली भावनाएं, रागात्मक प्रवृत्ति का बढ़ना, आवेश में आना, भड़कना तथा उत्तेजित होना, खास व्यवहार करना, चेतन अनुभूति, आंगिक प्रक्रियाएं, अभिव्यंजक व्यवहार, आत्मनिष्ठ भाव, शारीरिक उपद्रवता, शरीर के भीतरी एवं बाह्य अंगों की प्रतिक्रियाएं आदि संवेग हैं। संवेग मानव-विकास का महत्त्वपूर्ण पहलू है। प्रेम, भय, क्रोध, ईर्ष्या, काम, शोक आदि संवेग व्यक्तित्व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति का संवेगात्मक व्यवहार शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक, चारित्रिक और सौन्दर्य बोध आदि के विकास पर भी प्रभाव डालता है। संवेग मानव जीवन का महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

संवेग क्या है- 'संवेग' अंग्रेजी के इमोशन शब्द का हिन्दी अनुवाद है। 'इमोशन' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'इमोवेरे' से मानते हैं, जिसका अर्थ-

*विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, ला[redacted]नागौर, राजस्थान- 341306

भारतीय नारी के विविध आयाम

(A Peer-reviewed Book)

सम्पादकद्वय

डॉ० बाबूलाल मीना

एम० ए० संस्कृत, [illegible] पीएच० डी०, साहित्याचार्य

एसोसिएट प्रोफेसर

अध्यक्ष संस्कृत विभाग

[illegible] राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

भरतपुर (राजस्थान)

डॉ० आशा सिंह रावत

एम० ए० संस्कृत, पीएच० डी०, साहित्याचार्य

एसोसिएट प्रोफेसर

अध्यक्ष संस्कृत विभाग

[illegible] (स्वायत्त) स्नातकोत्तर महाविद्यालय

[illegible] (मध्य प्रदेश)

सत्यम् पब्लिशिंग हाउस

नई दिल्ली (भारत)

5. योगेश कानवा के साहित्य में नारी विमर्श (आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में) 253
—डॉ० हंसराज चैहान

6. समकालीन हिन्दी कहानी में कामकाजी नारी की समस्याएँ 259
—*डॉ० सुनील कुमार शर्मा*

7. विजेन्द्र की लम्बी कविताओं में नारी जीवन 271
—*डॉ० बाबू लाल बैरवा 'नागर'*

पंचम अध्याय
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी : विविध आयाम

1. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी का समालोचनात्मक अध्ययन 281
—*प्रो. बनवारी लाल जैन और डॉ० अमिता जैन*

2. आधुनिकता एवं भारतीय समाज में महिलाओं की परिवर्तित प्रस्थिति के आयाम 291
—*डॉ० रूकमणी मीना*

3. विभिन्न कालखण्डों में नारी-दशा और दिशा 300
—*डॉ० (श्रीमती) मनीषा शर्मा*

4. भारत में नारी शक्ति (सिक्ख धर्म के विशेष संदर्भ में) 308
—*श्रीमती बलजीत कौर और डॉ० सुमन यादव*

5. नारी सशक्तिकरण और अरुणा आसफ अली 316
—*डॉ० विजय लक्ष्मी चौधरी*

षष्ठ अध्याय
विभिन्न क्षेत्रों में नारी : विविध आयाम

1. पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी 323
—*मानसिंह मीना*

2. बदलते परिदृश्य में नारी का बदलता स्वरूप 336

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी का समालोचनात्मक अध्ययन

प्रो० बनवारी लाल जैन और डॉ० अमिता जैन*

प्रस्तावना

जैसे नदी का पानी स्वच्छ और निर्मल होता है, वैसे नारी का मन निर्मल होता है। उसके मन में निर्मलता के मानवीय गुण निहित होते हैं, दया, करुणा, सम्मान, परोपकार, सहानुभूति, धैर्य, उदारता, सेवा, सहनशीलता, प्रेम, वात्सल्य, त्याग आदि गुणों का भण्डार होता है।[1] निश्छल तथा निष्कपट होकर सेवा कार्य करती है। उसका अन्तःकरण शुद्ध होता है। गंगा में गन्दे पदार्थ डालकर कोई उसे अपवित्र करता है, वैसे ही नारी को गलत क्रियाएं से कोई अपवित्र करता है, वह बात अलग है, लेकिन वह निर्मलता तथा पावनता की प्रतिमूर्ति है। उसके मन में सदैव आन्तरिक सुन्दरता होती है, उसे वह संजोने तथा संवारने का कार्य करती है। निर्मल मन होने के कारण परिवार, समाज तथा राष्ट्र में आनन्द, खुशी और प्रसन्नता की बरसात करती है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा - "मुझे आप सौ शिक्षित माताएँ दीजिए, मैं भारतीय समाज का नक्शा बदल दूँगा।"

* विभागाध्यक्ष शिक्षाविभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं-नागौर (राजस्थान)
सहायक प्रोफेसर शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं-नागौर (राजस्थान)